इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Tribal University
अमरकंटक (म.प्र.) || Amarkantak (MP)

प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी
कुलपति

Ref. NO. IGNTU/2021/VC

Date: 11/04/2021

संदेश

भारत में समरस समाज की रचना और सामाजिक उन्नयन की प्रक्रिया को गति प्रदान करने वाले महापुरूषों में ज्योतिपुरूष ज्योतिराव गोविन्दराव फुले का अग्रणीय स्थान है। असमानता, अन्याय, शोषण तथा जातीय भेदभाव और विद्वेष जैसी संकीर्णताओं और कुरीतियों को समाप्त करने के लिये वह आजीवन सपत्नीक प्रयत्नशील रहे। शिक्षा के माध्यम से समता और विकास की धारा प्रवाहित होने का विचार देने वाले फुले प्रखर समाज सुधारक, विचारक और वंचित वर्ग उद्धारक के रूप में देदीप्यमान हैं। उन्होंने नामदेव, कबीर और रैदास जैसे संतों की आजीवन संघर्षी चेतना को आत्मसात करते हुये भारतीय सामाजिक व्यवस्था को और ज्ञान परम्परा को आदर्श स्वरूप प्रदान करने का व्रत लिया था। जाति व्यवस्था में निहित कुरीतियों और जातीय संकीर्णताओं के निवारण तथा महिलाओं की शिक्षा के प्रति ज्योति जागृत करने का उन्होंने अनुकरणीय कार्य किया। नैतिक मूल्यों का जीवन में समावेश हेतु आग्रह, मानवतावादी विचारों का प्रसार तथा शिक्षा और सामाजिक सुधार उनके प्रमुख कार्य क्षेत्र रहे हैं।

वर्तमान महाराष्ट्र के सतारा जनपद में 11 अप्रैल 1827 को जन्में ज्योतिराव फुले का सम्पूर्ण जीवन समाज सुधार एवं आदर्श समाज की रचना के लिये संकल्पित रहा। 28 नवम्बर, 1890 को 63 वर्ष की आयु में अंतिम प्रस्थान करने वाले फुले की गणना भारत की संत परम्परा एवं महापुरुषों की श्रेणी में की जाती है। 19वीं शताब्दी में अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के साथ उन्होंने भारत में महिला शिक्षा की दिशा में विशेष कार्य किया। अस्पृश्यता निवारण एवं दलित शोषित वर्ग के उद्धार के लिये उनका प्रयास महनीय है। तत्कालीन भारतीय समाजिक व्यवस्था में निहित विषमताओं को दूर करने के लिये उन्होंने सतत संघर्ष करते हुये सत्यशोधक समाज की स्थापना की जिसका मूल उद्देश्य दलित वर्ग के लिये समान अधिकारों की व्यवस्था करना था। शिक्षा, तकनीकी कुशलता और औद्योगिक सामर्थ्य से समृद्धि और सफलता के द्वार खुलते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भारत विश्व का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बने, ऐसा उनका संकल्प एवं प्रयास था। कौशल और दक्षता को लोक कल्याण हेतु व्यावहारिक धरातल पर उतारने का व्रत फलीभूत करने के लिये ज्योतिराव गोविन्दराव फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने सन् 1848 में पुणे में लड़कियों के लिये विद्यालय की स्थापना की। केवल महाराष्ट्र ही नहीं अपितु पूरे भारत में उन्होंने लोगों को सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये जागृत किया। उन्होंने 'गुलामगिरी' पुस्तक की रचना की जो सामाजिक सुधार का एक विशिष्ट दस्तावेज है। उनके मनतव्य एवं कार्यों से प्रभावित होकर महाराष्ट्र के सामाजिक सुधारक विठ्ठलराव कृष्णाजी वाण्डेकर ने उन्हें 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया था।

सामयिक संदर्भो में उनके विचारों से भारत ही नहीं अपितु विश्व की विद्यमान समस्याओं का निदान सम्भव है। उनके आचरण का अनुसरण और कृत्यों से प्रेरणा लेते हुये ही भारत की ज्ञान परम्परा, अधुनातन विज्ञान और नारी शिक्षा की दिशा में अभीष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है। इसी से विकास के सभी मानक तय होंगे तथा मानवता का कल्याण होगा। भारतीय महिलायें अपनी शिक्षा, ज्ञान शक्ति और वैज्ञानिक उपलब्धियों के माध्यम से विश्व पटल पर भारत को प्रतिष्ठित करने में अपना योगदान करेगीं, ऐसी उनकी मान्यता रही है। मेधा के धनी ज्योतिराव फुले जैसे समाज सुधारकों के लोकोपयोगी विचारों से ही आधुनिक संदर्भो में विकास के कीर्तिमान स्थापित होंगे। प्रेरणापुंज, पथप्रदर्शक महात्मा ज्योतिराव गोविन्दराव फुले को शत–शत नमन।

(प्रो0 श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी)

Scanned by CamScanner